संरक्षक, हिंविसाप

श्री कमलेश न. व्यास, निदेशक, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई

आयोजन समिति (हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद)

श्री हृषीकेश मिश्र श्री प्रमोद भागवत श्री कवींद्र पाठक डॉ. सुब्रत दत्ता	डॉ. कुलवंत सिंह श्री डी.एन. सिंह श्री प्रदीप रामटेके श्री कपिल अंबष्ठ	श्री विपुल सेन श्री राजेश कुमार श्री प्रवीण दुबे श्री नरसिंह राम	श्री संजय गोस्वामी श्री अनिल अहिरवार

आयोजन समिति (विश्व भारती, शांतिनिकेतन)

अध्यक्ष, पल्ली शिक्षा भवन	अध्यक्ष, भाषा भवन
अध्यक्ष, शिक्षा भवन	अध्यक्ष, हिंदी विभाग
डॉ. अमिताभ पाल, अध्यापक, पल्ली शिक्षा भवन	डॉ. नीहार रंजन चक्रवर्ती, अध्यापक पल्ली शिक्षा भवन
श्री अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, संकटग्रस्त भाषा केंद्र	श्री संदीप देवनाथ, अध्यापक, पल्ली शिक्षा भवन

पंजीकरण

सामान्य प्रतिभागी : रु. 1000/- सहभागी / शोधार्थी : रु. 500/-

शैक्षणिक संस्थानों द्वारा नामित छात्र : रु. 200/- (एक संस्थान से अधिकतम दस)

संगोष्ठी में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी अपने विवरण (नीचे पंजीकरण प्रपत्र देखें) के साथ अपना पंजीकरण शुल्क "हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद" के नाम से डिमांड ड्राफ्ट/चेक द्वारा "डॉ. कुलवंत सिंह, संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी, पदार्थ विज्ञान प्रभाग, भा.परमाणु.अ.केंद्र, ट्रॉम्बे, मुंबई- 400085 पर भेजें. पंजीकरण शुल्क ऑनलाइन द्वारा भी ट्रांसफर किया जा सकता है (हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद, खाता संख्या **34185199589 IFS Code : SBIN0001268**, SBI, भापअकेंद्र, ट्रॉम्बे, मुंबई). **अंतिम तिथि 20 अक्टूबर, 2017** है. अपने शोध विषय पर हिंदी में सारांश एक पृष्ठ में hvsp@barc.gov.in पर अंतिम तिथि से पहले भेजें

पंजीकरण प्रपत्र

नाम : ---------- पंजीकरण शुल्क ---------- संलग्न --- चेक / ड्राफ्ट / ऑनलाइन ट्रांसफर रसीद ----

पता : ----------

आयु : ---------- स्त्री/पुरुष : ---------- आवास: चाहिए/नहीं चाहिए: ----------

संस्था : ---------- टेली./मो.न.---------- ईमेल : ----------

आवास व्यवस्था

बाहर से आने वाले प्रतिभागियों के लिये उचित दर पर सशुल्क सीमित आवास उपलब्ध हैं. इच्छुक प्रतिभागी **20 अक्टूबर, 2017** तक स्थानीय संयोजक से संपर्क करें.

संपर्क सूत्र

संयोजक: डॉ. कुलवंत सिंह, सचिव, हिंविसाप, पदार्थ विज्ञान प्रभाग, भा.प.अ.केंद्र, ट्रांबे, मुंबई-400085 फोन:022-25595378, ईमेल: hvsp@barc.gov.in

सह-संयोजक: डॉ. सुब्रत दत्ता, बी.आर.एन.एस., भा.प.अ.केंद्र, मुंबई-400085 फोन:022-25595331, ईमेल:dsubrata@barc.gov.in

सह-संयोजक: श्री प्रवीण दुबे, आई.एच.एस.एस., भा.प.अ.केंद्र, मुंबई-400085 फोन:022-25592236, ईमेल:praveend@barc.gov.in

स्थानीय संयोजक: डॉ. अमिताभ पॉल, विश्व भारती, शांतिनिकेतन, प.बंगाल-731235, फोन:9434197215, ईमेल:amitava.paul@visva-bharati.ac.in

राष्ट्रीय संगोष्ठी : साहित्य, संस्कृति एवं विज्ञान

17-18 नवंबर 2017

विश्व भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

आयोजन स्थल: कम्यूनिटी हाल, पल्ली शिक्षा भवन (Inst. of Agriculture), श्रीनिकेतन

आयोजक

हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद
भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई -400085

विश्व भारती, शांतिनिकेतन
बोलपुर, बीरभूम, पश्चिम बंगाल -731235

विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रशासक

परिदर्शक (Visitor)

श्री रामनाथ कोविंद
भारत के महामहिम राष्ट्रपति

आचार्य (Chancellor)

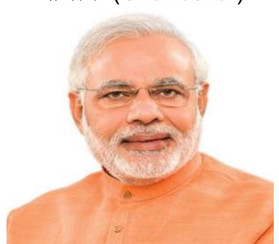

श्री नरेंद्र मोदी
भारत के माननीय प्रधानमंत्री

प्रधान (Rector)

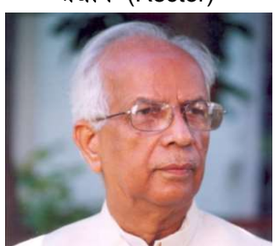

श्री केसरी नाथ त्रिपाठी
प.बंगाल के माननीय राज्यपाल

संगोष्ठी प्रसंग : साहित्य, संस्कृति एवं विज्ञान

संस्कृति किसी समाज में व्याप्त गुणों का समग्र रूप है, जो उस समाज के रहन-सहन, खान-पान, सोचने, विचार करने, कार्य करने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला इत्यादि में परिलक्षित होती है. संस्कृति का वर्तमान रूप समाज द्वारा दीर्घ काल तक अपनायी गयी पद्धतियों का परिणाम होता है. साहित्य का संबंध मानवीय भाव-संवेदनाओं तथा समाज के उन्नतिपरक विकास से होता है. प्रकृति के क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहते हैं. विज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान या विद्या है जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोग से प्राप्त होती है. विज्ञान तथ्य, सिद्धान्त और तरीकों को प्रयोग और परिकल्पना से स्थापित करती है. प्राचीन भारतीय साहित्य में विज्ञान की भी प्रचुरता है. मानव जाति के विकास के लिए संस्कृति एवं साहित्य के साथ साथ विज्ञान अति आवश्यक है. विश्व भारती, भारत का प्रतिनिधित्व करती है. यहाँ भारत की बौद्धिक संपदा सभी के लिए उपलब्ध है. अपनी संस्कृति के श्रेष्ठ तत्व दूसरों को देने में और दूसरों की संस्कृति के श्रेष्ठ तत्व अपनाने में भारत सदा से उदार रहा है. विश्व भारती भारत की इस महत्वपूर्ण परंपरा को स्वीकार करती है. वर्तमान समय में विज्ञान ने ऊर्जा के सबसे शक्तिशाली और अप्रतिम स्रोत के रूप में नाभिकीय ऊर्जा की खोज की. हमारे नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रमों ने जन जीवन के लिए ऊर्जा उत्पादन के साथ-साथ जनहित में कई नए आयाम

स्थापित किये हैं. भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तहत संचालित अनुसंधान एवं विकास कार्यों ने खाद एवं कृषि, मानव स्वास्थ्य, जल शुद्धिकरण, अपशिष्ट प्रबंधन एवं पर्यावरण संरक्षण, जैसे जन उपयोगी क्षेत्रों में भी विशेष योगदान दिया है. भारत की अक्षुण्ण संस्कृति, समृद्ध साहित्य और गौरवमयी विज्ञान के सम्मिलित रूप से ही समग्र राष्ट्रीय विकास की परिकल्पना को पूरा किया जा सकता है. इसी संकल्पना के साथ हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद, भाभा परमाणु ऊर्जा अनुसंधान केंद्र, मुंबई ने विश्व भारती, शांतिनिकेतन के साथ मिलकर साहित्य, संस्कृति और विज्ञान के विभिन्न आयामों पर सारगर्भित चर्चा के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया है, जो विश्व भारती, शांतिनिकेतन में दिनांक 17-18 नवंबर 2017 को संपन्न होगी. अपेक्षा है कि प्रतिभागी विशेषज्ञों / वक्ताओं के ज्ञान भंडार से कुछ ऐसे तथ्य उद्घाटित होंगे, जो भारतवर्ष में साहित्य, संस्कृति और विज्ञान की गरिमामय पृष्ठभूमि को और-अधिक आलोकित करेंगे.

हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद

हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, ट्रॉम्बे, मुंबई विगत पांच दशकों से प्रगत वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी के विविध क्षेत्रों में हो रहे शोध कार्यों को राजभाषा हिंदी के माध्यम से जन सामान्य एवं वैज्ञानिक समुदाय तक पहुँचाने का उल्लेखनीय कार्य कृत-संकल्प से करती आ रही है. इस अभीष्ट लक्ष्य की पूर्ति हेतु परिषद त्रैमासिक पत्रिका "वैज्ञानिक" का प्रकाशन, वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण, अखिल भारतीय "डॉ. होमी भाभा विज्ञान लेख प्रतियोगिता", वैज्ञानिक विषयों पर मोनोग्राफ का लेखन एवं प्रकाशन, छात्रों के लिए विज्ञान प्रश्नमंच, लब्ध प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों की वार्ताएं तथा विज्ञान संगोष्ठियों का आयोजन करती आ रही है. इस वर्ष परिषद अपनी स्थापना की **स्वर्ण जयंती** भी मना रही है. परिषद ने 1989 से अनवरत देश के कई क्षेत्रों में विभिन्न वैज्ञानिक व तकनीकी विषयों पर संगोष्ठियों का सफल आयोजन किया है. पिछली कुछ संगोष्ठियों के शीर्षक एवं स्थान इस प्रकार हैं :

2009: देहरादून – पर्वतीय क्षेत्र में औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण
2011: बीकानेर – सामजिक परिपेक्ष्य में परमाणु ऊर्जा का बहुआयामी कार्यक्रम
2012: चित्रकूट – नाभिकीय प्रौद्योगिकी व रसायन विज्ञान के जनहित अनुप्रयोग
2013: जूनागढ़ – कृषि, खाद एवं स्वास्थ्य संबर्धन में नाभिकीय प्रौद्योगिकी की भूमिका
2014: कोलकाता – नाभिकीय प्रौद्योगिकी के नवीनतम आयाम तथा अनुप्रयोग
2015: जम्मू – जनकल्याण हेतु नाभिकीय प्रौद्योगिकी के व्यापक अनुप्रयोग
2015: लखनऊ – कृषि, ऊर्जा एवं स्वास्थ्य में विज्ञान के नवीनतम आयाम
2016: भोपाल - पुरातन एवं नवीन भारत में विज्ञान एवं ऊर्जा के आयाम
2017: रायपुर - विज्ञान एवं पुरातत्व

विश्व भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

विश्व भारती की स्थापना सन् 1921 में विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक, नोबल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रबिंद्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल में की. यह भारत के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है. अनेक स्तानक और परास्तानक संस्थान इससे संबंधित हैं. इनके पिता महर्षि देवेंद्र नाथ ठाकुर ने सन् 1863 में साधना हेतु कोलकाता के निकट बोलपुर ग्राम में एक आश्रम की स्थापना की जिसका नाम शांतिनिकेतन रखा. जिस स्थान पर वे साधना करते थे वहाँ संगमरमर की एक शिला पर बंगला भाषा में अंकित है - "तिनी आमार प्राणेद आराम मनेर आनन्द, आत्मार शांति". सन् 1901 में गुरुदेव रबिंद्रनाथ टैगोर ने इसी स्थान पर बाल शिक्षा हेतु एक प्रयोगात्मक विद्यालय स्थापित किया जो प्रारंभ में ब्रह्म विद्यालय बाद में `शांतिनिकेतन' तथा सन् 1921 में 'विश्व भारती' के नाम से प्रख्यात हुआ. उनका विचार था कि एक ऐसे शिक्षा केंद्र की स्थापना की जाए, जहाँ पूर्व और पश्चिम को मिलाया जा सके. सन् 1916 में रबिंद्रनाथ टैगोर ने एक पत्र में लिखा था- "शांतिनिकेतन को समस्त जातिगत तथा भौगोलिक बंधनों से अलग हटाना होगा, यही मेरे मन में है. समस्त मानव-जाति की विजय-ध्वजा यहीं गड़ेगी. पृथ्वी के स्वादेशिक अभिमान के बंधन को छिन्न-भिन्न करना ही मेरे जीवन का शेष कार्य रहेगा." अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए टैगोर ने सन् 1921 में शांतिनिकेतन में **'यत्र विश्वम भवत्येकनीडम'** (सारा विश्व एक घर है) के नए आदर्श वाक्य के साथ विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की. तभी से यह संस्था एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में ख्याति प्राप्त कर रही है. इस विश्वविद्यालय के मुख्य उद्देश्य हैं –

(1) विभिन्न दृष्टिकोणों से सत्य के विभिन्न रूपों की प्राप्ति के लिए मानव मस्तिष्क का अध्ययन करना.
(2) प्राचीन संस्कृति में निहित आधारभूत एकता के अध्ययन एवं शोध द्वारा उनमें परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना.
(3) एशिया में व्याप्त जीवन के प्रति दृष्टिकोण व विचारों के आधार पर पश्चिम के देशों से संपर्क बढ़ाना.
(4) पूर्व एवं पश्चिम में निकट संपर्क स्थापित कर विश्व शांति की संभावनाओं को विचारों के स्वतंत्र आदान-प्रदान द्वारा दृढ़ बनाना.
(5) इन आदर्शों को ध्यान में रखते हुए शांतिनिकेतन में ऐसे सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना जहाँ धर्म, साहित्य, इतिहास, विज्ञान एवं हिंदू, बौद्ध, जैन, मुस्लिम, सिख, ईसाई और अन्य सभ्यताओं की कला का पश्चिमी संस्कृति के साथ, आध्यात्मिक विकास के अनुकूल सादगी के वातावरण में अध्ययन और उनमें शोधकार्य.

विश्व भारती के कुछ उल्लेखनीय पूर्व विद्यार्थी - सत्यजीत रे, अमर्त्य सेन, इंदिरा गांधी, कनिका बनर्जी, बिहारी मुखर्जी

परमाणु ऊर्जा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

संगोष्ठी में युवा पीढ़ी में परमाणु ऊर्जा संबंधी जागरूकता के उद्देश्य से स्थानीय शैक्षणिक संस्थाओं के स्नातक / स्नातकोत्तर विद्यार्थियों / शोधार्थियों के लिए "परमाणु ऊर्जा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया जायेगा. प्रतियोगिता दो चरणों में संगोष्ठी से एक दिन पूर्व **16 नवंबर को आयोजित** की जायेगी. प्रथम चरण में नाभिकीय ऊर्जा विषय पर बहुविकल्प प्रश्न होंगे एवं एक घंटे का समय होगा. प्रथम चरण में प्राप्त अंकों के आधार पर आठ विद्यार्थियों को दूसरे चरण के लिए चुना जाएगा. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को तक नाम देना होगा. प्रतिभागियों के लिए कोई शुल्क नहीं है. विजेताओं को पदक एवं प्रमाण पत्र दिये जायेंगे.

पोस्टर प्रस्तुति

संगोष्ठी के दौरान शोधार्थियों / प्रतिभागियों द्वारा अपने अपने शोध विषयों पर पोस्टरों का प्रदर्शन किया जायेगा. श्रेष्ठ पोस्टरों को निर्णायक समिति द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा. पोस्टर का आकार लगभग एक मीटर x एक मीटर. पंजीकरण की **अंतिम तिथि 20 अक्टूबर, 2017** है.

प्रमुख आमंत्रित वार्ताएं

- विश्व उत्थान में विश्व भारती का योगदान
- आधुनिक विज्ञान में भारत का योगदान
- वैश्विक संस्कृति एवं साहित्य का केंद्र – विश्व भारती
- भारतीय परमाणु ऊर्जा का वर्तमान परिदृश्य
- कृषि एवं खाद्य पदार्थ के क्षेत्र में नाभिकीय प्रौद्योगिकी का उपयोग एवं उपलब्धियाँ
- आइसोटोप प्रौद्योगिकी का स्वास्थ्य एवं सामाजिक समृद्धि में योगदान
- भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित तकनीकें

राष्ट्रीय सलाहकार समिति

डॉ. शेखर बसु, सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग एवं अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग
डॉ. श्रीकुमार बनर्जी, भाभा चेयर, पूर्व अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग
प्रो. स्वपन कुमार दत्ता, कुलपति (स्थानापन्न), विश्व भारती, शांतिनिकेतन
श्री एस. के. शर्मा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एन.पी.सी.आई.एल., मुंबई
डॉ. एस. ए. भारद्वाज, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद, मुंबई
डॉ. यू. कामाची मुदली, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी, भारी पानी बोर्ड
श्री जी. गणेश, मुख्य कार्यकारी, विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड
श्री पी. गोवर्धन, नियंत्रक, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई
श्री हृषीकेश मिश्र, अध्यक्ष, हिं.वि.सा.प., सह निदेशक, अ.से.वर्ग, भापअकेंद्र, मुंबई
श्री हिमांशु शंकर, आंतरिक वित्त सलाहकार, भापअकेंद्र, मुंबई
प्रो. अमित हाजरा, कुलसचिव (स्थानापन्न), विश्व भारती